एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9011T
पाठ्यक्रम क्रमांक	I
पाठ्यक्रम का नाम	**पाण्डुलिपि विज्ञान**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5(स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थियों को पाण्डुलिपि का सामान्य अर्थ एवं स्वरूप, उसके स्रोत एवं संरक्षण-संवर्धन की प्रवृतियों का ज्ञान होगा। इसके अतिरिक्त वर्ण और शब्द संरचना एवं लिपि के भेद व प्राचीनता का ज्ञान विद्यार्थियों को कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	5. विद्यार्थी पाण्डुलिपि की प्राचीनता, इतिहास और विकास का अनुशीलन कर सकेंगे। 6. विद्यार्थियों में प्राचीन पाण्डुलिपियों का ज्ञान विकसित होगा। 7. विद्यार्थी ज्ञान विज्ञान के प्राचीन स्रोतों की तरफ उन्मुख हो सकेंगे। 8. विद्यार्थियों में संरक्षित प्राचीन विरासत की समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	पाण्डुलिपि सम्पादन के निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त- 1. पाण्डुलिपि विज्ञान का स्वरूप एवं महत्त्व 2. पाण्डुलिपि की रचना-प्रक्रिया एवं चिन्ह	12
इकाई - II	1. पाण्डुलिपि प्राप्ति विवरण बाह्य एवं अंतरंग परिचय 2. लिपि के प्रकार (ब्राह्मी, देवनागरी आदि)	12
इकाई - III	पाण्डुलिपि सम्पादन के निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त 1. वर्ण-विकार एवं शब्द अर्थ की समस्या 2. पाठालोचन की प्रमुख प्रणालियां एवं पाठ-निर्माण	12
इकाई - IV	1. काल-निर्धारण के प्रमुख आधार 2. प्रमुख ग्रन्थ - भण्डारों का परिचय एवं महत्त्व	12
इकाई - V	1. पाण्डुलिपि ग्रन्थों का संरक्षण एवं विभिन्न पाण्डुलिपि ग्रन्थसूचियों का परिचय 2. प्रमुख प्रकाशित ग्रन्थ भण्डारों के केटलॉग का परिचय	12
सहायक पुस्तकें	1. पाण्डुलिपि सम्पादन कला - डा. राम गोपाल शर्मा 'दिनेश', प्रभात प्रकाशन, नईदिल्ली, 1979 2. पाण्डुलिपि विज्ञान - डा. सत्येन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1978 3. पाठालोचन की भूमिका - डॉ. एस.एम. कत्रे 4. सामान्य पाण्डुलिपि विज्ञान - डा. महावीर प्रसाद जैन, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर, 2003 5. भारतीय पुरालिपि विद्या - डा. कृष्णदत्त वाजपेयी 6. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डा. नेमिचन्द शास्त्री (पृ.247-296) 7. भारतीय प्राचीन लिपिमाला, गौरीशंकर, हीराचन्द ओझा, अजमेर, 1918 8. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास (भाग 5), पं.अम्बालाल शाह, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वनारस, 2005	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9012T
पाठ्यक्रम क्रमांक	II
पाठ्यक्रम का नाम	**प्राकृत व्याकरण एवं अपभ्रंश भाषा**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5(स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	इस पत्र से विद्यार्थी प्राकृत भाषा एवं व्याकरण के सूत्र व नियम तथा अपभ्रंश व्याकरण एवं चरितकाव्यों के स्वरूप को जान सकेंगे। इसके अतिरिक्त प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के शब्द रूपगठन एवं कृदन्तों से अवगत कराया जायेगा। इस तरह प्राकृत व्याकरण के अभ्यास के माध्यम से प्राकृत वाक्य रचना से विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	5. विद्यार्थी अर्धमागधी प्राकृत भाषा एवं व्याकरण का सूत्रों के माध्यम से अध्ययन कर पाएंगे□ 6. प्राकृत भाषा में प्रयुक्त अव्यय, संधि, समास, विशेषण एवं वाक्य प्रयोग की जानकारी को प्राप्त कर सकेंगे□ 7. विद्यार्थियों में अपभ्रंश भाषा की समझ विकसित होगी। 8. अपभ्रंश चरितकाव्य परंपरा एवं उसके रचनाकारों का ज्ञान हो सकेगा□

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	हेमशब्दानुशासन के तृतीय पाद के सूत्र 1-42 एवं 58-182 सूत्रों की सोदाहरण हिन्दी व्याख्या। इसके लिए -प्राकृत व्याकरण के संज्ञा एवं सर्वनाम से सम्बन्धित हेमशब्दानुशासन के निर्धारित सूत्रों में से आठ सूत्रों को देकर चार की व्याख्या पूछना	12
इकाई - II	प्राकृत व्याकरण के अव्यय, सन्धि, समास, विशेषण एवं वाक्य प्रयोग से सम्बन्धित सोदाहरण नियम लिखना	12
इकाई - III	अपभ्रंश व्याकरण एवं चरित काव्य, अपभ्रंश व्याकरण के प्रमुख नियम (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्त के नियम)	12
इकाई - IV	णायकुमारचरिउ, प्रथम संधि	12
इकाई - V	प्राकृत भाषा में निबन्ध लेखन (अणुसासणं, माया मित्ताणि णासइ, अहिंसा, मेत्ती, मज्झ पिय-पोत्थअं/कवि, दीवाली)	12
सहायक पुस्तकें	1. हेमशब्दानुशासन (प्यार चन्द महाराज) की हिन्दी व्याख्या, ब्यावर 2. हेम प्राकृत व्याकरण, डा. उदय चन्द्र जैन, 1983 3. हेमचन्द्र का शब्दानुशासन : एक अध्ययन - डा. नेमि चन्द शास्त्री 4. प्राकृतमार्गोपदेसिका - पं. बेचरदास दोशी 5. अपभ्रंश काव्यधारा - डा. जैन एवं डा. शर्मा, अहमदाबाद 6. णायकुमारचरिउ - डा. हीरालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली, 1990 7. प्राकृत व्याकरण - डा. उदय चन्द्र जैन 8. प्राकृत स्वयं शिक्षक- डा. प्रेम सुमन जैन (तृतीय आवृत्ति), □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□, □□□□□, 2003 9. प्राकृत रचनोदय - डा. उदय चन्द्र जैन, न्यू भारतीय बुक कारपोरेशन, नईदिल्ली, 2007 10. अपभ्रंश का जैन साहित्य एवं जीवन-मूल्य - साध्वी डा. साधना 11. अपभ्रंश रचना सौरभ - डा. के. सी. सोगानी	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9102T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III A
पाठ्यक्रम का नाम	**जैन आगम, ध्यान एवं योग**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	विद्यार्थियों को जैन आगम] ध्यान एवं योग का स्वरूप एवं विश्लेषण का अध्ययन प्राकृत आगम ग्रन्थों को आधार बनाकर कराया जायेगा। आगम साहित्य की परम्परा का ज्ञान और जैन ध्यान एवं योग के सिद्धान्त एवं प्रक्रिया की जानकारी इस पत्र के माध्यम से हो सकेगी।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	5. विद्यार्थी अर्धमागधी प्राकृत भाषा में रचित आगमों का अध्ययन कर पाएंगे। 6. प्राकृत साहित्य में वर्णित ध्यान और योग की जानकारी को प्राप्त कर सकेंगे। 7. विद्यार्थियों में जैन परम्परा में प्रचलित ध्यान व योग के सिद्धान्त एवं प्रक्रिया की समझ विकसित होगी। 8. प्राचीन प्राकृत आगम परंपरा का ज्ञान प्राप्त होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	अर्द्धमागधी आगम, सूत्रकृतांग (प्रथम समय अध्ययन 83 गाथाएँ)	12
इकाई – II	उपासकदशांगसूत्र – प्रथम आनन्द श्रावक अध्ययन	12
इकाई – III	पठित ग्रन्थों का दार्शनिक, भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	12
इकाई – IV	जैन ध्यान – सिद्धान्त एवं प्रक्रिया, भेद–प्रभेद	12
इकाई – V	जैन योग – सिद्धान्त एवं प्रक्रिया, व्याख्या	12
सहायक पुस्तकें	1. सूत्रकृतांग सूत्र - सं. मुनि मधुकर (हिन्दी व्याख्या सहित) 2. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वनारस, 2005 3. जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा - आ. देवेन्द्र मुनि शास्त्री 4. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डा. जगदीश चन्द्र जैन 5. जैन साधना पद्धति में ध्यान योग - डा. साध्वी प्रियदर्शना 6. जैन योग का आलोचनात्मक अध्ययन - डा. अर्हतदास डिगे 7. ध्यान एक दिव्य साधना - आ. डा. शिवमुनि 8. योग बिन्दु के परिप्रेक्ष्य में जैन योग - साधना का समीक्षात्मक अध्ययन - डा. सुव्रत मुनि शास्त्री 9. जैन परम्परा में ध्यान का स्वरूप - डा. सीमा रानी शर्मा 10. योग मनन और संस्कार - आ. शिवमुनि 11. ध्यान विचार - आ. कलापूर्णसूरि 12. उपासकदशांग - साध्वी डा. स्मृति 13. सूत्रकृतांग का दार्शनिक अध्ययन - डा. नीलांजना श्री 14. ध्यान का स्वरूप - डा. हुकम चंद भारिल्ल 15. श्रावक धर्मदर्शन - उपाध्याय पुष्कर मुनि	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9103T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III B
पाठ्यक्रम का नाम	**जैन योग एवं स्वास्थ्य विज्ञान**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5(स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	जैनधर्म की परम्परा अतिसमृद्ध है। इस परम्परा के साहित्य में अंकित जैन योग के माध्यम से बाह्य शुद्धि एवं अन्तरंग शुद्धि पर विशेष ध्यान दिया जाता है जिसका अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। साथ ही विभिन्न योगपरक मूल्यों का विश्लेषण कराया जायेगा। योग के विभिन्न नियमों और अभ्यास की जानकारी विद्यार्थियों को दी जायेगी।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. **विद्यार्थी जैन ग्रंथों में आगत योग की सूक्ष्मता का ज्ञान प्राप्त करेंगे।** 2. जैन योग और उसके माध्यम से स्वास्थ विज्ञान का अधिगम करेंगे। 3. जैनाचार-आहार संयम और स्वास्थ विज्ञान की समझ विकसित होगी। 4. जैन योग का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्त्व का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	ध्यान शतक (जिनभद्रगणि) सम्पूर्ण	12
इकाई – II	जैन योग की परम्परा, विकास एवं भेद–प्रभेद तथा पठित ग्रन्थ पर आलोचनामत्क प्रश्न	12
इकाई – III	जैन परम्परा में ध्यान एवं योग का सम्बन्ध, स्वास्थ्यविज्ञान एवं योग की प्राचीन परम्परा	12
इकाई – IV	जैनाचार–आहार संयम एवं स्वास्थ्य का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक आधार, यौगिक क्रियाएं और स्वास्थ्य–चिन्तन, स्वास्थ्य–निर्माण एवं समाज–संरचना में जैन योग का प्रभाव,	12
इकाई – V	जैन योग की समसामयिक व्यवहार्यता, जैन योग का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्त्व	12
सहायक पुस्तकें	1. ध्यान शतक (जिनभद्रगणि), वीर सेवा मंदिर, नई दिल्ली 2. जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा - आ. देवेन्द्र मुनि शास्त्री 3. जैन साधना पद्धति में ध्यान योग - डा. साध्वी प्रियदर्शना 4. जैन योग का आलोचनात्मक अध्ययन - डा. अर्हतदास डिगे 5. ध्यान एक दिव्य साधना - आ. डा. शिवमुनि 6. योग बिन्दु के परिप्रेक्ष्य में जैन योग - साधना का समीक्षात्मक अध्ययन - डा. सुव्रत मुनि शास्त्री 7. अनेकान्त से स्वास्थ्य समृद्धि एवं शान्ति, प्रो. पारसमल अग्रवालए कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर, 2007 8. जैन परम्परा में ध्यान का स्वरूप - डा. सीमा रानी शर्मा 9. योग मनन और संस्कार - आ. शिवमुनि 10. प्राकृत साहित्य के व्यावहारिक पक्ष, डॉ. ज्योति बाबू, भारतीय प्राकृत स्कालर्स सोसायटी, उदयपुर, 2019 11. उपासकदशांग - साध्वी डा. स्मृति 12. श्रावक धर्मदर्शन - उपाध्याय पुष्कर मुनि 13. जैन विज्ञान, आचार्य सुनीलसागर जी महाराज	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9104T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV A
पाठ्यक्रम का नाम	**जैन सिद्धान्त एवं दर्शन**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5(स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	जैनधर्म-दर्शन का विशेष महत्त्व है। इस पत्र से विद्यार्थियों को अनेकान्त सिद्धान्त का अध्ययन सन्मतिसूत्र नामक प्राकृत ग्रन्थ के माध्यम से कराया जायेगा।। दशवैकालिक सूत्र के अध्ययन से साधु के आचरण की सूक्ष्मता का ज्ञान हो सकेगा। विद्यार्थी जैनधर्म के आलोक में इसके प्रमुख सिद्धान्त- अनेकान्त और स्याद्वाद आदि का अध्ययन कर सकेंगे। अनेकान्त जैनदर्शन का प्राण है जो वस्तुस्वरूप का सम्यक् विश्लेषण कराना सिखाता है। इससे भी विद्यार्थी लाभान्वित होगें। जैनदर्शन के सत्ता स्वरूप एवं कर्म-सिद्धान्त आदि की मीमांसा और उनके सांस्कृतिक मूल्यांकन का अध्ययन कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थी भारतीय ज्ञान में अनेकान्त सिद्धान्त की भूमिका का ज्ञान प्राप्त करेंगे। 2. विद्यार्थी दशवैकालिकसूत्र में वर्णित दृष्टान्तों के माध्यम से दार्शनिक सिद्धान्त एवं आचरण पद्धति का ज्ञान व समझ हो सकेगी। 3. भारतीय दर्शन परम्परा में जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों की समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	सम्मइसुत्तं, सिद्धसेन, (तीसरा अनेकान्त खण्ड) गाथा 1-70 एवं समीक्षा	12
इकाई - II	दशवैकालिक सूत्र (1 से 4 अध्ययन)	12
इकाई - III	जैनदर्शन के प्रमुख सिद्धान्त, स्याद्वाद एवं अनेकान्तवाद का विवेचन	12
इकाई - IV	जैनदर्शन की समीक्षा- सत्- स्वरूप, सप्ततप्व एवं कर्म सिद्धान्त	12
इकाई - V	जैन साहित्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन- समाज, दर्शन, कला एवं शिक्षा आदि की दृष्टि से जैन साहित्य का मूल्यांकन	12
सहायक पुस्तकें	1. सन्मतिसूत्र (हिन्दी अनुवाद) - डा. देवेन्द्र कुमार शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ,नईदिल्ली, 2003 2. दशवैकालिक - मधुकर मुनि, आगम प्रकाशन, ब्यावर 3. तत्त्वार्थसूत्र - पं. सुखलाल सिंघवी, 4. जैनदर्शन - पं. महेन्द्र कुमार जैन "न्यायाचार्य" 5. जैन दर्शन : मनन और मीमांसा - मुनि नथमल, 6. जैन धर्म-दर्शन - डा. मोहन लाल मेहता 7. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डा. जगदीश चन्द्र जैन 8. कुवलयमालाकथा का सांस्कृतिक अध्ययन - डा. प्रेम सुमन जैन 9. ए क्रिटीकल स्टडीज आफ पउमचरियं - डा. के. आर. चन्द्रा 10. स्टडीज इन भगवती सूत्र - डा. जे. सी .सिकदर 11. दशवैकालिक - आचार्य आत्माराम जी म. सा.	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9105T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV B
पाठ्यक्रम का नाम	**प्राकृत काव्य साहित्य-मीमांसा**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5(स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	प्राकृत काव्य साहित्य अतिसमृद्ध है। इस पत्र से विद्यार्थी प्राकृत साहित्य का अध्ययन कुम्मापुत्तचरियं**,** पउमचरियं एवं कुमारवालपडिबोह के आधार से किया जायेगा**,** जिसका आलोचनात्मक अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। इसके साथ ही प्राकृत कथा एवं चरित विधाओं के बारे में अध्ययन करेंगे। इससे विद्यार्थियों को काव्य साहित्य की परम्परा, प्राकृत भाषा में रचित कथा एवं चरित साहित्य की समृद्धता का ज्ञान होगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. इस पत्र से विद्यार्थियों में प्राकृत काव्य साहित्य की परम्परा, प्राकृत भाषा में रचित कथा एवं चरित साहित्य की समृद्धता की समझ विकसित होगी। 2. विद्यार्थी प्राकृत साहित्य की विविध काव्य विधाओं को जान पाएंगे।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई – I	कुम्मापुत्तचरियं–अनन्तहंसकृत (चिन्तामणि दृष्टान्त)	12
इकाई – II	पउमचरियं (विमलसूरि) अंजना–पवनंजय कथा का मूल पाठ	12
इकाई – III	कुमारवालचरियं (द्वयाश्रय काव्य), आचार्य हेमचन्द्र (1-100 गाथाएँ)	12
इकाई – IV	पठित ग्रन्थों पर आलोचनात्मक प्रश्न	12
इकाई – V	प्राकृत काव्य साहित्य की परम्परा, विकास एवं विविध विधाएँ और वैशिष्ट्य, प्रमुख प्राकृत–काव्यकारों और उनकी कृतियों का परिचय	12
सहायक पुस्तकें	1. कुम्मापुत्तचरियं-अनन्तहंसकृत अनुवादक - डा. जिनेन्द्र कुमार जैन 2. पउमचरियं(विमलसूरि) 3. कुमारवालचरियं - आचार्य हेमचन्द्र 4. जैन दर्शन - पं. महेन्द्र कुमार जैन 5. जैन दर्शन : मनन और मीमांसा - मुनि नथमल 6. जैन धर्म-दर्शन – डा. मोहन लाल मेहता 7. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डा. जगदीश चन्द्र जैन 8. क्रिटीकल स्टडीज आफ पउमचरियं - डा. के. आर. चन्द्रा 10. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 6 12. जैन आगम साहित्य: मनन और मीमांसा - आ. देवेन्द्र मुनि शास्त्री 13. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डा. जगदीश चन्द्र जैन	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9106T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V A
पाठ्यक्रम का नाम	**जैन धर्म, समाज एवं संस्कृति**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**DSE (Discipline Specific Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	जैन धर्म का उद्भव एवं विकास, सामाजिक पक्ष और जैनधर्म की संघ परम्परा का विवेचन इस पत्र में किया गया है । इनका अध्ययन विद्यार्थी जैनधर्म के आलोक में कर सकेंगे। साथ ही जैनधर्म में नारी की स्थिति एवं जैनधर्म में पर्यावरण, शाकाहार जैसे बहुउपयोगी तथ्यों का समसामयिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन कराया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	5. विद्यार्थियों में जैन धर्म का उद्भव एवं विकास, सामाजिक पक्ष और जैनधर्म की संघ परम्परा की समझ विकसित होगी। 6. पर्यावरण, शाकाहार जैसे बहुउपयोगी विषयों के प्रति विद्यार्थियों की रुचि जागृत होगी। 7. जैनधर्म परिप्रेक्ष्य में सामाजिक–जीवन जीने की कला की समझ होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	जैन धर्म : उद्भव एवं विकास	12
इकाई - II	जैनधर्म की विशेषताएँ एवं जैन धर्म का समाज पर प्रभाव	12
इकाई - III	जैन धर्म की परम्परा - दिगम्बर एवं श्वेताम्बर	12
इकाई - IV	जैन धर्म में नारी की स्थिति	12
इकाई - V	जैन धर्म में पर्यावरण विज्ञान, शाकाहार वर्तमान युग में महत्त्व	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन धर्म - डा.राजेन्द्र मुनि 2. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास - डा.भाग चन्द्र जैन 3. जैनधर्म की मौलिक विशेषताएँ, डॉ. रमेश चंद जैन, आचार्य ज्ञानसागर ग्रन्थमाला, श्री दिग. जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर, 2004 4. जैन धर्म - पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री 5. धर्म दर्शन, मनन और मीमांसा - आ.देवेन्द्र मुनि, तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, उदयपुर, 1997 6. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण - प्रो.प्रेम सुमन जैन 8. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डा.हीरालाल जैन 9. आगम युग में जैन दर्शन - पं.दलसुखभाई मालवणिया 10. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डा.जगदीश चन्द्र जैन 11. भारतीय वाड्मय में नारी - आचार्य देवेन्द्र मुनि, तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, उदयपुर, 2002 12. जिणधम्मो - आचार्य नानेश 13. जैन धर्म एक झलक, डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, श्रुत संवर्धन संस्थान, मेरठ, 2016	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9107T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V B
पाठ्यक्रम का नाम	**जैनाचार का समाजशास्त्रीय अध्ययन**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	भारतीय समाज के विविध सामाजिक पक्षों का अध्ययन जैनधर्म के आलोक में किया जा सकेगा। साथ ही अणुव्रत, इन्द्रिय संयम, आहारशुद्धि, अपरिग्रह आदि सिद्धान्तों का सामाजिक संरचना में उपयोगिता की विवेचना की जायेगी। इसके अतिरिक्त अहिंसा, सत्य, समता एवं क्षमापना जैसे बहुमूल्य मौलिक जीवनमूल्यों का समाजहित में अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. अणुव्रत, इन्द्रिय संयम, आहारशुद्धि, अपरिग्रह आदि सिद्धान्तों के अध्ययन से विद्यार्थियों में रुचि जागृत होगी। 2. विद्यार्थियों में अहिंसा, सत्य, समता एवं क्षमापना जैसे मूल्यों का समाजहित में अध्ययन करने की समझ विकसित होगी। 3. विद्यार्थियों को विविध सामाजिक पक्षों के अध्ययन से जैनधर्म की समृद्धता का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	जैनाचार : अणुव्रत दर्शन की पृष्ठभूमि, अणुव्रतों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण	12
इकाई - II	इन्द्रिय संयम एवं आहारशुद्धि की सामाजिक पृष्ठभूमि, समाज-विकास का आधार शाकाहार	12
इकाई - III	अपरिग्रह दर्शन की सार्वभौमिकता, विश्वशान्ति और सामाजिक समरसता का आधार – अपरिग्रहवाद : स्वरूप, परिणाम और विकृतियों के निवारण की जैन दृष्टि	12
इकाई - IV	अणुव्रत दर्शन के विविध आयाम : अहिंसा, सत्य की सामाजिक पृष्ठभूमि- सिद्धान्त, प्रयोग एवं विश्लेषण	12
इकाई - V	अहिंसा, समता, क्षमापना के परिप्रेक्ष्य में समाज-संरचना की जैन दृष्टि, रात्रि	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास - डा.भाग चन्द्र जैन 2. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डा.हीरालाल जैन 3. जैन धर्म-दर्शन - डा.रमेश चन्द्र जैन 4. जैन धर्म - पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री 5. धर्म दर्शन, मनन और मीमांसा - आ.देवेन्द्र मुनि 6. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण - प्रो.प्रेम सुमन जैन 7. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डा.जगदीश चन्द्र जैन 8. भारतीय वाड्मय में नारी - आचार्य देवेन्द्र मुनि 9. जिणधम्मो - आचार्य नानेश 10. अनेकान्त से स्वास्थ्य समृद्धि एवं शान्ति, प्रो. पारसमल अग्रवालए कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर, 2007 11. अहिंसा दर्शन (एक अनुचिन्तन), डा. अनेकान्त कुमार जैन, श्रीलालबहदुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नईदिल्ली, 2016	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9108T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI A
पाठ्यक्रम का नाम	**भारतीय ज्ञान परम्परा एवं प्राकृत**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**GEC (Genral Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5(स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	भारतीय ज्ञान परंपरा में प्राकृत भाषा एवं साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। इस पत्र के अंतर्गत विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परम्परा और प्राकृत भाषा एवं साहित्य का ज्ञान होगा। साथ ही इस पत्र में भारतीय इतिहास-पुरातत्त्व एवं प्राकृत भाषा के अन्तर्सम्बन्ध को जानने मिलेगा। भाषा के अध्ययन के लिए अपभ्रंश एवं हिन्दी आदि आधुनिक भाषाएं का अध्ययन भी इस पत्र में करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. विद्यार्थियों में भारतीय ज्ञान परम्परा और प्राकृत भाषा एवं साहित्य की समझ विकसित होगी। 2. अपभ्रंश एवं हिन्दी आदि आधुनिक भाषाएं का ज्ञान होगा। 3. भारतीय नाट्य परम्परा में प्राकृत की समृद्धता का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	भारतीय ज्ञान परम्परा में प्राकृत का स्थान : भारतीय भाषाओं का उद्भव, परम्परा एवं प्राकृत भाषा , भारतीय भाषाओं का उद्भव, परम्परा एवं प्राकृत भाषा, प्राकृत भाषा के स्रोत व अवशेष और प्राकृत भाषा का भारतीय भाषाओं में स्थान	12
इकाई - II	भारतीय इतिहास, पुरातत्त्व एवं प्राकृत भाषा : भारतीय इतिहास एवं जैनधर्म, पुरातत्त्व में जैनधर्म प्राकृत भाषा की प्राचीनता एवं उसके प्रमुख केन्द्र	12
इकाई - III	भारतीय नाट्य परम्परा में प्राकृत : भारतीय संस्कृत नाट्य परम्परा एवं प्राकृत, अश्वघोष के नाटकों में प्राकृत के तत्त्व और भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र एवं प्राकृत विधान	12
इकाई - IV	भारतीय कला एवं प्राकृत साहित्य : लेखन कला का उद्भव एवं विकास जैन साहित्य में कलाओं के सन्दर्भ : पुरुषों की 72 कला एवं स्त्री की 64 कला आदि।	12
इकाई - V	प्राकृत-अपभ्रंश एवं हिन्दी आदि आधुनिक भाषाएं : आधुनिक भाषाओं के विकास में प्राकृत का योगदान प्रादेशिक भाषाएँ: हिन्दी राजस्थानी, गुजराती और अन्य आधुनिक भाषाएँ	12
सहायक पुस्तकें	1. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास - डा.भाग चन्द्र जैन 2. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डा.हीरालाल जैन 3. नाट्य शास्त्र में प्राकृत सन्दर्भ, डॉ. सुदर्शन मिश्र, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर, 2013 4. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डा.जगदीश चन्द्र जैन **5.** जैन धर्म - पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री 6. प्राकत भाषा से अनुप्राणित भारतीय भाषाएं- डा. ज्योति बाबू जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली, 2022 7. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज - डा. जगदीश चन्द्र जैन	

एम. ए जैनविद्या एवं प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT9109S
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI B
पाठ्यक्रम का नाम	**भारतीय दार्शनिक परम्परा एवं जैनदर्शन**
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	4
पाठ्यक्रम का प्रकार	**GEC (Genral Elective Course)**
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्युटोरियल
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	स्नातक उत्तीर्णता OR एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 5.5 (स्नातक स्तर की उत्तीर्णता)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	भारतीय दार्शनिक परम्परा में जैनदर्शन का एक विशिष्ट दर्शन माना जाता है। जैनदर्शन ने मौलिक सिद्धान्तों के माध्यम से अपनी एक पहचान बना रखी है। इन मौलिक सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन इस पत्र में किया जायेगा। जैनदर्शन की विशेषताओं का ज्ञान होगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	5. विद्याथियों को भारतीय दार्शनिक परम्परा का ज्ञान होगा। 6. भारतीय दार्शनिक परम्परा की जानकारी होगी। 7. भारतीय वैदिक, बौद्ध चार्वाक एवं जैनदर्शन के सिद्धान्त सम्बन्धी समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 60
इकाई - I	भारतीय दार्शनिक चिन्तनधारा में प्रमाण : प्रमाण का स्वरूप एवं भेद समन्तभद्राचार्य, आचार्य सिद्धसेन, आचार्य अकलंक, हरिभद्रसूरि, हेमचंद्राचार्य	12
इकाई - II	जैन न्याय के प्रमुख मनीषी एवं उनका साहित्य : समन्तभद्राचार्य, आचार्य सिद्धसेन, आचार्य अकलंक, हरिभद्रसूरि, हेमचंद्राचार्य	12
इकाई - III	प्रमाण का लक्षण एवं प्रत्यक्ष प्रमाण : जैन प्रमाण की परम्परा, स्वरूप एवं भेद और प्रत्यक्ष प्रमाण का लक्षण व भेद	12
इकाई - IV	परोक्ष प्रमाण एवं सर्वज्ञसिद्धि : परोक्ष प्रमाण का लक्षण एवं भेद, सर्वज्ञता का स्वरूप एवं उसकी सिद्धि	12
इकाई - V	प्रमाणाभास एवं प्रमाण का विषय एवं फल	12
सहायक पुस्तकें	1. भारतीय दर्शन में आत्मा एवं परमात्मा, डॉ. वीरसागर जैन, भारतीय ज्ञानपीठ नईदिल्ली, 2009ई. 2. जैन प्रमाण शास्त्र, प्रो. धर्मचं द जैन, जयपुर 3. आगम युग में जैन दर्शन - पं.दलसुखभाई मालवणिया 4. प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में प्रतिपादित दार्शनिक मीमांसा, डॉ. सुमत कुमार जैन, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर, 2013ई. 5. जैन न्याय मंदिर, प्रो. वीर सागर जैन 6. धर्म दर्शन, मनन और मीमांसा - आ.देवेन्द्र मुनि 7. आगम युग में जैन दर्शन - पं.दलसुखभाई मालवणिया 8. जैन न्याय प्रदीपिका, प्रो. वीर सागर जैन, 9. बौद्ध दर्शन - बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, 2002 ई. 10. बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन भाग 1-2, भरतसिंह उपाध्याय, बंगाल हिंदी मंडल, कलकत्ता- 1956	